International Journal of Humanities and Social Science Invention (IJHSSI)
ISSN (Online): 2319 – 7722, ISSN (Print): 2319 – 7714
www.ijhssi.org ||Volume 6 Issue 3 || March. 2017 || PP 97-102

राजस्थान की भक्ति परम्परा के प्रमुख संत

सिया राम मीणा
प्रवक्ता , हिन्दी विभाग , बाबू शोभाराम राजकीय कला महाविद्यालय , अलवर , राजस्थान , 301001

सारांश
सृष्टि में जीवन यापन करने वाले समस्त प्राणी अपना कुछ न कुछ सतत् कार्य करते रहते हैं। इनमें मानव सबसे श्रेष्ठ प्राणी है। वह लगातार कुछ अच्छा करने के लिए प्रयासरत रहता है। सभी प्राणियों में मानव में ही सोचने समझने की शक्ति ज्यादा होती है। जब–जब भी समाज में किसी प्रकार की क्षति होने की स्थिति बनती है तब समाज में कोई विरला पैदा होता है, जो अन्दर से उद्वेलित होता है और कुछ कर सकने की भावना उसके अन्दर जागृत होती है। समाज को गति प्रदान करने, मार्ग प्रास्त करने का काम कोई सत् पुरुष ही कर पाता है, जिन्हें हम संत, सज्जन, साधु, महापुरुष, भक्त के नाम से जानते हैं। हमारे दे के अन्दर भी इस तरह के महापुरुष, संत पुरुष खूब हुए हैं। संत का काम समाज को खोई हुई दि से पुनः सही मार्ग दिखाना होता है। जब दे में हिन्दू–मुस्लिम समाजों में हाहाकार मचा हुआ था, उस समय कुछ ऐसे लोगों का प्रादुर्भाव हुआ, जिन्होंने समाज की स्थिति को समझा और गति प्रदान करने में 05 अहम् भूमिका निभाई।

मुख्य बिन्दु :– गुरु गोरखनाथ , जैन संत , गोगा जी , तेजा जी , पाबू जी , मल्लिनाथ , दादू दयाल , देव जी , लालदास , श्री जसनाथजी , सूफी संत एवं निष्कर्ष ।

परिचय :–

संत से अभिप्राय सत् पुरुष से है जो हमेा सही राह, ज्ञान, दिा खोजने/जानने की कोा लिए आगे बढ़ता है। उसके अन्दर अज्ञात को जानने की लालसा बराबर बनी रहती है। वह जब तक पीछे नहीं हटता है, तब तक उसे उसमें सफलता नहीं मिलती है। लम्बे कष्ट के बाद उसे आत्म ज्ञान/चेतना की प्राप्ति होती है, जिसे वह स्वयं अनुभव करता है और समाज को मार्ग प्रास्त करने में अहम् भूमिका निभाता है। मेरे विचार से संत की श्रेणी में यही व्यक्ति आता है।

संत , सत पुरुष, सज्जन, महापुरुष इन सभी का कार्य समाज व मानव मात्र का कल्याण करना प्रमुख उद्देय होता है। ये दिखावा पसन्द नहीं करते हैं। निर्लिप्त भाव से मानव कल्याण का कार्य करते हैं। इन्हें संत की श्रेणी में माना जा सकता है।

संत अपने ज्ञान के बल पर ही भक्त बनने की ओर अग्रसर होता है। सन्त में जिज्ञासा एवं अज्ञात को जानने की ललक होती है। भक्त में आस्था, श्रद्धा, प्रेम व भक्ति भावना प्रबल होती है। मेरा मानना है कि संत और भक्त दोनों अलग–अलग हैं लेकिन दोनों एक दूसरे के पूरक हैं। ज्ञान के बिना भक्ति और भक्ति के बिना ज्ञान अपूर्ण है।

हमारे दे में जब सामाजिक, धार्मिक, राजनैतिक और सांस्कृतिक उथल–पुथल का वातावरण था, तब इन्हीं सन्तों/भक्तों ने संदे दिया। भारत में सर्वप्रथम दक्षिण भारत के भक्तों ने ज्ञान व भक्ति का प्रचार–प्रसार किया। दक्षिण भारत में सर्वप्रथम भक्ति का मार्ग प्रास्त हुआ।

भक्ति द्रविड़ ऊपजी लायो रामानन्द,

प्रकट किया कबीर ने सप्त द्वीप नौ खण्ड।

धीरे–धीरे कालान्तर में यही भक्ति भावना भारत के उत्तरी छोर तक फैलती चली गई। हिन्दू समाज में सन्त कवियों ने समाज को सन्मार्ग पर लाने के लिए निर्गुण ब्रह्म की उपासना का मार्ग प्रास्त किया और समाज के बिखराव को दूर करने के लिए एकता का प्रयास किया। इस प्रकार के सदमार्ग को गति प्रदान करने वाले लोगों में जयदेव, नामदेव, सदना, त्रिलोचन, वेणी, रामानन्द, कबीर, धन्ना, पीपा, रैदास, दादू, मीराबाई, चरणदास, रामचरणदास, लालदास, आदि नामचीन संतों का नाम लिया जा सकता है। इन सन्तों के द्वारा जगाई गई अलख हिन्दुस्तान के कौने–कौने तक फैलती चली गई। समाज में सभी प्रकार के मानवीय भावों को विस्तार देने का काम इन सभी के द्वारा किया गया।

संत/महात्मा का काम आत्म शीलन, अनुीलन व चेतना प्रकट करना माना गया है। दया, नम्रता, सदाचार, करुणा, परोपकार, सत्य, न्याय, धर्म, सन्तोष, सहिष्णुता, सहनालता, परस्पर एकता, मानवता, शीलता, मिलनसारिता, मधुरता, सत्संगति, परदुखकातरता, जनकल्याण भाव आदि के द्वारा मानव समाज की सेवा करना ही उद्देय माना गया है।

राजस्थान की धरती पर भी कई सारे विरले संतों का आविर्भाव हुआ है, जिनमें चरणदासी सम्प्रदाय के प्रमुख के रूप में संत चरणदास का नाम प्रमुखता से लिया जा सकता है। इनके वचन, वाणी, ज्ञान, सूत्र व उपदेश समाज के लिए

महत्त्वपूर्ण हैं। संत के रूप में चरणदास का नाम चिरस्मरणीय है। संतों के बीच ये महत्त्वपूर्ण स्थान रखते हैं। अतः राजस्थान की भक्ति परम्परा के प्रमुख प्रणेताओं का विवेचन करना आवयक है।

राजस्थान की भक्ति परम्परा के प्रमुख प्रणेता

राजस्थान वीरों की धरती मानी जाती है। यानी तलवार वालों की जमीं, भुजबल्लियों की धरती के नाम से प्रसिद्ध है। ऐसा कहा जाता है कि राजस्थान शूरों की ही नहीं, सन्तों की भूमि भी है। यहाँ पर सत पुरुष (सन्त) व भक्त दोनों का भी खूब बोलबाला रहा है, जिन्होंने राजस्थान जैसे विस्तृत भूभाग वाले प्रदे की निरीह जनता को अपने उपदों, प्रवचनों, ज्ञान, वाणी आदि से समय–समय पर मार्ग र्दान किया है। इस भक्ति परम्परा मार्ग के प्रमुख प्रणेता के रूप में निम्न का प्रमुख योगदान रहा है–

गुरु गोरखनाथ

नाथ सम्प्रदाय के प्रधान नेता व गुरु गोरखनाथ माने जाते हैं। इनका प्रभाव सम्पूर्ण भारत में पूर्व से पचिम तक और उत्तर से दक्षिण तक माना जाता है। गोरखनाथ की 12 ष्यि परम्पराएँ स्थापित हुई, इनमें से माननाथी पंथ अथवा पावनाथी पंथ मारवाड़ के जोधपुर में वर्तमान में हैं। राजस्थान के राजपूत राजवां में प्रमुख वां राठौर, सिसोदिया और कछवाहा राजाओं के नाथ/योगी गुरु रहे हैं। नाथ पंथी साधु अपने कान फोड़े रहते हैं। इसलिए इन्हें कनफड़े साधु भी कहा जाता है। राजस्थान में गोपीचन्द नाथ, भर्तृहरि नाथ से सम्बन्धित कई अलौकिक गाथाएँ प्रचलित हैं। "मेवाड़ राज्य के संस्थापक रावल वापा के गुरु हारीत भी नाथ सम्प्रदाय से सम्बन्धित ज्ञात होते हैं और मेवाड़ राज कुल के उपास्य भगवान एकलिंग की पूजा का कार्य भी सैकड़ों वर्ष तक नाथ योगियों की अधीनता में रहा।"1

जैन सन्त

राजस्थान में भी दे के अन्य भूभागों की तरह ही जैन तीर्थंकरों का विाष्ट योगदान रहा है। जैन धर्म के प्रवर्तक भगवान ऋषभदेव माने जाते हैं। इनके बाद 23 अन्य तीर्थंकर हुए, जिनमें प्रमुखताः भगवान महावीर का नाम लिया जा सकता है। भगवान महावीर का समय 521–469 वि. सं. से पूर्व माना गया है। मन, वचन व कर्म से किसी प्राणी को कष्ट न देना जैन धर्म का प्रमुख सिद्धान्त है। जैन धर्म के लिए जैसलमेर, नागौर आदि जैन ग्रन्थ भण्डार अपनी गौरवता आज भी बनाए हुए हैं।

राजस्थान के आबू, रणकपुर, औसियाँ, नागदा, चितौड़, सांगानेर आदि जैन धर्म के प्रमुख प्राचीन केन्द्र हैं। जहाँ विाल जैन मन्दिर स्तूपादि मिलते हैं। भारतीय साहित्य में जैन साहित्य का विष महत्त्व है क्योंकि इसके प्रणेता परम तपस्वी और अनुभवी व्यक्ति रहे हैं।

गोगाजी

राजस्थान की भक्ति परम्परा के संतों की फ़ेहरिस्त में गोगा जी एक ऐसे संत हैं, जिनको यहाँ लोक देवता के रूप में मान्यता है और राजस्थान के पाँच पीरों में गोगा जी का नाम बड़े ही सम्मान से लिया जाता है। इनके पिता का नाम जेवर और माता का नाम बाछल था। इनके पिता चुरू के शासक थे। इनका समय दसवीं शती ई. में माना जाता है। कुछ विद्वान 11वीं सदी मानते हैं। राजस्थान के गंगानगर में इनकी समाधि है। यहाँ पूरे देश से अनेक श्रद्धावान आते हैं। इनके नाम से खीर, लापसी और चूरमा का प्रसाद चढ़ता है।

तेजाजी

तेजाजी का जन्म नागौर गांव में 1074 ई. को हुआ। मारवाड़ के जाट इतिहास में तेजाजी का गोत्र धौल्या माना गया है। ये वीर तथा गोरक्षा एवं असहायों की सहायता करने वाले पराक्रमी हुए हैं। वर्तमान में ब्यावर के तेजा चौक में तेजाजी का थान है।

पाबू जी

ऐसा माना जाता है पाबू जी का जन्म 1239 ई. में हुआ था। इनका मुख्य स्थान फलोदी है। जहाँ प्रतिवर्ष पाबू जी के नाम का मेला लगता है। ये राजस्थान के लोक देवता हैं। इन्होंने भक्तिकालीन संतों के समान अस्पृश्यता का विरोध किया। स्त्री सम्मान, गोरक्षा, शरणागत और पराक्रमता के कारण इनको लोक देवता के रूप में पूजते हैं।

मल्लीनाथ

मल्लीनाथ राजस्थान के पराक्रमी संत पुरुष रहे हैं। इनका जन्म मारवाड़ के रावल सलखा के ज्येष्ठ पुत्र के रूप में 1358 ई. में हुआ था। पिता की मृत्यु के उपरांत अपने चाचा कान्हड़देव के यहाँ उनकी शासन व्यवस्था देखने लगे। ये

1374 ई. में जालौर के स्वामी बन गये। कहा जाता है कि 1378 ई. में तेरह दलों में बंटकर आक्रमण करने वाली फिरोज तुगलक के मालवा सूबेदार निजामुद्दीन की सेना को मल्लीनाथ ने मार भगाया, इससे इनकी प्रतिष्ठा अत्यधिक बढ़ गई।2

मल्लीनाथ ने अपने पराक्रम से अपने राज्य का विस्तार किया और अपने रिश्तेदारों को अनेक जागीर भी प्रदान की। ये एक सिद्धपुरुष भी थे। इन्होंने अपनी पत्नी रूपादे से प्रेरणा पाकर 1389 ई. में मल्लीनाथ उगमसी भाटी के शिष्य हो गये और इन्होंने अपने गुरु से योग साधना की दीक्षा ग्रहण की। ऐसा माना जाता है कि मल्लीनाथ के द्वारा अपने सारे संतों को एकत्रित करके हरि सुमिरन सम्बन्धी कीर्तन को भी आयोजित किया गया। 1399 ई. में ये स्वर्ग सिधार गये। बाड़मेर में लूनी नदी की तलहटी में इनके नाम का मन्दिर भी है। यहीं पर राव मल्लीनाथ ने चिर समाधि ली थी। राजस्थान की भक्ति परम्परा के संतों में एक कुशल योद्धा, ईश्वर को समर्पित भक्त मल्लीनाथ थे।

दादूदयाल

संत दादूदयाल राजस्थान की धरती के प्रमुख सम्प्रदाय दादू सम्प्रदाय के जन्मदाता माने जाते हैं। ढूढ़ाड़ (जयपुर) के आस–पास के क्षेत्र में इस का प्रचार–प्रसार खूब हुआ। दादू दयाल का जन्म वि.सं. 1601 में अहमदाबाद में माना जाता है। दादू साहित्य में ज्ञान, गुरु भक्ति, सत्संग, वैराग्य माया, जीव और ब्रह्म आदि विषयों पर खूब वर्णन देखने को मिलता है। इन्होंने अपनी रचनाओं में दूरुहता को सदा ही दूर रखा है। धर्म से सम्बन्धित सभी विचारों को सरलतम भाषा में प्रकट किया है।

संत दादूजी की वाणी में ज्ञान, स्मरण, विषय निन्दा, अनन्यता, नाम महिमा, आश्रम, भगवत महिमा, वैराग्य, नाम विस्मरण से हानि, विरह, प्रेम आदि भावों की खूब अभिव्यक्ति हुई है। जिनका प्रभाव चरणदास के काव्य में भी देखनों को मिलता है।

सन्त रज्जब

संत रज्जब का जन्म राजस्थान के जयपुर प्रान्त के सांगानेर में वि. सम्वत् 1624 में माना गया है। 20 वर्ष की आयु में अपना विवाह करने आमेर आए तो दादूजी से साक्षात्कार हुआ और उसी समय वैवाहिक बन्धन को छोड़कर दादू पंथ में दीक्षित हो गए।

रज्जब के दो प्रमुख ग्रन्थ माने गए हैं।'वाणी' और सरवंगी। इन दोनों ग्रन्थों में रज्जब के अगाध ज्ञान, गुरु भक्ति और काव्य शक्ति का परिचय मिलता है। संत रज्जब मुसलमान होते हुए भी रचनाओं में मुस्लिम प्रभाव नजर नहीं आता है। इन्होंने राजस्थानी शब्दावली से युक्त सरल, सरस हिन्दी भाषा का प्रयोग किया है। इनकी अन्य रचनाओं में प्रथम पावनी, दूसरी पावनी, पन्द्रह तिथि, गुरु उपदे अविगति, लीला, अकललीला, पारिख, उत्पत्ति निर्णय को अंग वैराग्य बोध, पराभेद, दोष दरीबे और जैन जंजाज मिलती हैं।

देवजी

देवजी का जन्म 1243 ई. के लगभग भोजा की गूजर स्त्री के द्वारा हुआ। इनको भगवान कृष्ण के अवतार के रूप में समाज में पूजा जाता है। इनके साथ इनके भाई भूणाजी की भी पूजा की जाती है। इनको लक्ष्मण का अवतार माना जाता है। देवजी और इनके भाई भूणा जी की लोकगाथाएँ समाज में गाई जाती हैं। इनका जीवन चमत्कारों से पूर्ण है। इनका मुख्य स्थान भीलवाड़ा में माना जाता है। आज भी माघ शुक्ल षष्ठी और सप्तमी को खीर तथा चूरमा का प्रसाद चढ़ाकर लोक में इनकी पूजा की जाती है। ये प्रमुख संत के रूप में पूजे जाते हैं।

रामदेव जी

राजस्थान की भक्ति परम्परा में संत रामदेव को लोक देवता के रूप में भी पूजा जाता है। ऐसा माना जाता है वि.सं. 1409 की चैत्र शुक्ल, पंचमी को पिता अजमल जी एवं माता मैणादे के यहाँ इन्होंने अवतार लिया। इनको कृष्ण का अवतार माना जाता है। इनका विवाह नेतलदे के साथ हुआ। इन्होंने रणीचा गांव में 1385 ई. को समाधि ली।

रामदेव राजस्थान के समाज में चर्चित लोक देवता हैं जिसका महत्व वर्तमान में भी है। इनके नाम से आज भी मेले भरते हैं हिन्दू और मुसलमान दोनों धर्मों के अनुयायी इन्हें पूजते हैं। अन्य भक्तिकालीन संतों के सदृश ये भी मूर्तिपूजा और तीर्थयात्रा में अपनी अनास्था की भावना को व्यक्त करते हैं और जाति प्रथा पर भी विरोध दर्ज करते हैं। राजस्थान में रामदेव को सर्वसिद्धि एवं सुबुद्धि देने वाले देवता तथा मन की समस्त इच्छाओं को पूर्ण करने वाले देवता के रूप में जाना जाता है, इनको 'पीर' शब्द से भी संबोधित किया जाता है।

सन्त लालदास

स्वामी दादूजी महाराज से प्रभावित मेवात की धरती के प्रमुख सन्त स्वामी लालदास जी महाराज का जन्म वि.सं. 1597 में अलवर राज्य के घोली दूब ग्राम के मेव परिवार में हुआ था। इनके पिता का नाम चाँदमल व माता का नाम समुदा जी था। इनकी कुल आयु 108 वर्ष मानी गई है। इनका देहावसान 1705 वि. सं. में हुआ।

सन्त परम्परा को विकसित करने में इनका भी विष्ट योगदान रहा है। इन्होंने जीवन में बाह्य आडम्बर व मन की गरूरी का तीव्र विरोध किया था। सतगुरु की महिमा को साहिब से मिलने में महत्त्वपूर्ण स्थान दिया था। इस लिहाज से ये कबीर से कम नहीं थे। इनके पद और भजन संगीत की गरिमा से बँधे हुए हैं, जिनमें तन्मयता और लालित्य का अखण्ड समावे देखने को मिलता है।

गरवाय मत रे कीमत तेरी घट जायगी।

ऐसा सुन्दर तनतैं पाया, भजन बिना तैंयो ही गमाया।

क्या गफलत में सोता हैरे, इक दिन सूरत तेरी मिट जायगी।

जो तू कहता अपना–अपना सोहे जीया तों को सपना।

अनल स्वरूपी जल वल मितिया, यहाँ की यहाँ तेरी मिट जायेगी।।

जीवन भरतू करम करौगे, सो तुम जनम–जनम भुगतौगे।

धरम राज जब लेखो लैगो, वहाँ पर बात बिगड़ जायगी।

आगै दिया सो तै अब पाया, लालदास न भजन बनाया।

अब देगा आगे पावैगा, ना तर दौलत तेरी लुट जायगी।।3

लालदासी सम्प्रदाय में अनेक चमत्कारपूर्ण कथाएं प्रचलित हैं। ये मेवात के कबीर के रूप में भी जाने जाते हैं। इन्होंने विविध धर्मों में समन्वय स्थापित करते हुए मानव धर्म को प्रतिष्ठित करने का कार्य किया। इन्होंने दान, दया, अहिंसा, सत्संगति, सदाचार, सत्य, परोपकार जैसे मूल्यों का प्रसार तथा प्रचार संतों के मध्य किया। अंत में इन्होंने शेरपुर गांव में समाधि ली, जहाँ पर इनकी कब्र और 'मकबरा' वर्तमान में भी है। प्रत्येक वर्ष इनके नाम का मेला लगता है।

श्री जसनाथजी

राजस्थान की भक्ति परम्परा में संत श्री जसनाथ जी का महत्त्वपूर्ण स्थान है। इनका जन्म कतरियासर ग्राम (बीकानेर) में वि.सं. 1539 को हुआ व देहावसान वि.सं. 1563 में हुआ। इनकी अधिक मात्रा में रचनाएँ प्राप्त नहीं होती हैं। इनके काव्य में जीवन दर्न, कवित्त क्ति और वैराग्य के दर्न होते हैं। सोलहवीं शताब्दी में सन्त जसनाथजी का जन्म विष्ट महत्त्व रखता है।

इन्होंने गोरखनाथ जी से वि.सं. 1551 में दीक्षा ली और उन्होंने ही इनका नाम जसवन्त से जसनाथ रखा। इन्होंने विवाह नहीं किया। जसनाथ जी के जीवन में बहुत सारे चमत्कार देखने को मिलते हैं। राव बीकांजी के पुत्र घड़सी का गुमान चूर कर इन्होंने लूणकरण जी को राज्य प्राप्ति का वरदान दिया था। जसनाथ भारतीय साधना पद्धति की अनन्यतम और दीर्घ श्रृंखला, की एक महत्त्वपूर्ण कड़ी थे, जिन्होंने राजस्थान के मरु–क्षेत्र में परम्परागत महती संस्कृति को जीवित रखने का सतत प्रयास किया। "कतरियासर ही जसनाथ जी का मुख्य साधना तथा पूज्य स्थान है। यहाँ वर्ष में तीन बार आविन शुक्ल सप्तमी, माध शुक्ल सप्तमी और चैत्र शुक्ल सप्तमी को विराट मेला लगा करते हैं।"4

हरभू जी

हड़बू जी ने भी समाज में समरसता बनाये रखने का संकल्प लिया था और ये रामदेव के समकालीन थे। राजस्थान के मारवाड़ में जिन पाँच पीरों का नाम लिया जाता है उनमें हरभू जी का नाम भी बड़े सम्मान से लिया जाता है। समाज में ऐसी मान्यता है कि जीवन में रामदेव से प्रेरणा प्राप्त कर अस्त्र–शस्त्र का त्याग करके, संत बालीनाथ से इन्होंने दीक्षा ग्रहण की। जोधपुर नगर के राव जोधा जी ने अपने जीवन के संकट काल में संत हरभू जी के पास में रहकर समय व्यतीत किया और जब जोधा जी प्रस्थान करने लगे उस समय हरभू जी ने जोधा जी को आशीर्वाद देते हुए कहा –

जद तांई थारे पेट में, अठै खायोड़ा मूंग रैवेला।

तद ताइं जिती ई जमीन माथै, को घोड़ो फेर लेवौला।

उसी जमीन माथै थारै वंश रौ, राज्य कायम रैवेला।5

हरबू जी का पूरा जीवन सत्संग, कीर्तन करते हुए व्यतीत हुआ।

संत सुन्दरदासजी

राजस्थानी सन्त एवं भक्ति काव्य परम्परा में राजस्थान के दौसा क्षेत्र में वि.सं. 1653 को जन्में खण्डेलवाल महाजन कुल के दीपक महाराज सुन्दरदास का विष्ट महत्त्व है। ये सन्त काव्य परम्परा को विकसित करने वालों में अपनी विष पहचान रखते हैं। सन्त दादूदयाल जी ने इन्हें अपना चैला बना लिया था। इन्होंने दौसा से बाद में की तक का भ्रमण किया और अन्त में जयपुर के निकट सांगानेर में वि.सं. 1746 में इनका देहावसान हुआ। सुन्दरदासजी की रचनाओं का संग्रह सुन्दर ग्रंथावली के नाम से जयपुर के प्रसिद्ध विद्वान श्री हरिनारायण पुरोहित के द्वारा किया गया। इनके ग्रंथों की संख्या 43 है। इनकी महानता के विषय में प्रसिद्ध पद है–

दादू दीनदयाल के, चेले दोर पचास।

कोई उडुगण कई इन्दु हैं, दिनकर सुन्दरदास।।6

सन्तकाव्य परम्परा के अनुकूल ही इन्होंने गुरु महिमा व गुरु की सत्ता को सर्वोपरि माना है। निर्गुणी कवि होते हुए भी काव्य सहज व सरल, जनभाषी काव्य कला पर आधारित है। गुरु का महत्त्व प्रकट करते हुए इन्होंनें लिखा है–

गुरु–बिन ज्ञान नहीं, गुरु बिन ध्यान नहीं,

गुरु–बिन आतमविचार न लहतु है।

गुरु बिन प्रेम नहीं, गुरु बिन नेम नहिं

गुरु बिन सीलहू, सन्तोष न गहतु है।

गुरु बिन प्यास नहिं, बुद्धि को प्रका नहिं,

भ्रमहू को नास नहिं, ससेइ रहतु है।

गुरु बिन बाट नहिं, कौड़ी बिन हाट नहिं

सुन्दर प्रकट लोक, वेद यो कहतु है।7

सन्तकाव्य परम्परा को विकसित करने वाले राजस्थानी सन्तों में रिामणि–सुन्दरदास ने गुरु महिमा के अतिरिक्त–ज्ञानोपदे, काल की विकरालता देह व जगत की नवरता, आा–तृष्णा, आवासन, विवास, देह की मलिनता, मूर्खता, वाणी का महत्त्व तथा भजनों का महत्त्व प्रकट करने वाले पदों की रचना की। इनके इन भावों की अभिव्यक्ति से सन्त साहित्य को प्रबलता मिली।

संत मुईनुद्दीन चिती साहब

राजस्थान अपनी विविध संस्कृति व सभ्यताओं के लिए विष पहचान रखता है। यहाँ पर अनेक जातियों का आदान–प्रदान होने से सांस्कृतिक समन्वय देखने को मिलता है। इन सन्त का जन्म एक सामान्य परिवार में हुआ था। ये खजूर और विव विख्यात असफहानी आम के बाग में रखवाली करते थे, जो राहगीर उधर से निकलता, उसे बिना आम व खजूर दिए नहीं जाने देते थे। ये शाम को घर आ जाते और धर्मनिष्ठा की चर्चा अपने बुजुर्गों से करते थे।

ये सन्त प्रवृत्ति के थे। इनको सादा खाना पसन्द था व भड़कीले कपड़ों से सख्त नफरत थी। इन्सानियत के साथ जिन्दगी का बसर करना इन्हें पसन्द था। हिन्दू और मुसलमानों के बीच पनपी नफरत को मिटाना ही इनका प्रमुख ध्येय बन गया था। ये दोनों को एक सच्चे इन्सान के रूप में देखना चाहते थे। एकेवरवाद को बढ़ावा दिया। अपने सिद्धान्तों को प्रचारित करने के लिए कुछ सुक्तियाँ लिखी जो उनकी साधना, निष्ठा, बलि भावना, उत्सर्ग की पुष्टि करती हैं।

ये जितने धार्मिक थे, उतने ही सिद्धहस्त कवि भी थे। उन्होंने राजस्थान में अपनी वाणी की गुंजार फूंक दी थी। ये कभी किसी के फसलाने में नहीं आए। आज भी ख्वाजा साहब की मंजार पर अजमेर में पूरे भारतवर्ष से अनेक लोग आते हैं। ख्वाजा साहब ने 561 ई. में यहाँ पर इबादत की थी। इन्होंने सभी को दया और शांति का संदेश दिया।

महाराज श्रीचतुर जी बावजी

राजस्थान के उदयपुर प्रान्त में एक खण्डहरनुमा मकान में जन्में महापुरुष श्री चतुरसिंह जी हैं। हमारे दे व प्रदे में अनेक महापुरुष जो बाद में सन्त के रूप में विकसित हुए, का सतत आविर्भाव हुआ है। इन्होंने मानव समाज को कर्त्तव्य परायणता, योग्यता और साधना के बल पर संसार की उन्नति का मार्ग बताया। इन महापुरुषों के सिद्धान्तों का अवलम्बन लेकर ही उनसे उऋण हो सकते हैं।

निष्कर्ष :–

इन्होंने सारे भारत का भ्रमण कर अनेक सन्त महात्माओं से सम्पर्क साधा। आपने काबेरी तट निवासी महात्मा कमल भारती के पास योग साधना सीखने की इच्छा प्रकट की। कमल भारती ने कहा कि मेवाड़ में ही बाठरड़ा जागीरदार के गुमानसिंह जी योग विद्या में पारंगत हैं। आप उनसे ही ये विद्या सीखें। आपने योग साधना सीखने के साथ ही मद्य, माँस, हिंसा तथा सांसारिक वैभव से दूर रहने की बात समाज को बतलाई।

आप समाज को सही दिशा देने वाले प्रमुख राजस्थानी सन्त प्रणेताओं में सुमार हुए। महाराज के द्वारा आपको दिए गए र्दानास्त्र के गूढ़ तत्वों का आपने अपनी सरल, सरस वाणी में प्रचार–प्रसार किया। आपका देहान्त आषाढ़ कृष्ण 9 वि.सं. 1986 में हो गया था। गुरु वन्दना, सांख्य र्दान, समय की अस्थिरता, मानव देह के पूर्ण उपयोग आदि समाज सुधार वाले पदों की रचना की। इनकी कुल रचनाएँ 16 मानी जाती हैं।

सन्दर्भ :–

1ण उदयपुर राज्य का इतिहास प्रथम भाग–गौरीशंकर हीराचन्द औझा, पृ. सं. 249
2ण मल्लीनाथ रावत री निसांणी–हस्त.लि. क्र. 40672
3ण राजस्थानी संत साहित्य–डॉ. पुरुषोत्तमलाल मेनारिया, पृ.सं. 45
4ण राजस्थान के प्रमुख संत और लोकदेवता–डॉ. दिने चन्द ाक्ल पृ.सं. 20
5ण आस्था रौ उजास–डॉ. भवानी सिंह पालावत, पृ.सं. 31
6ण राजस्थानी संत साहित्य–डॉ. पुरुषोत्तम लाल मेनारिया, पृ.सं. 66
7ण राजस्थानी संत साहित्य–डॉ. पुरुषोत्तम लाल मेनारिया, पृ.सं. 48
8ण राजस्थानी संत साहित्य–डॉ. पुरुषोत्तम लाल मेनारिया, पृ.सं. 59
9ण संत काव्य–पराराम चतुर्वेदी, पृ.सं. 119
10ण भक्तमाल टीका–नाभादास, टीकाकार प्रियादास जी, पृ.सं. 453
11ण गुरु जम्मेवर विविध आयाम–किनाराम विनोई, पृ. सं. 2
12ण राजस्थान का इतिहास–गोपीनाथ ार्मा, प्रथम भाग. पृ.सं. 509
13ण नागरीदास ग्रन्थावली सम्पादक– फैयाज अली खाँ, पृ.सं. 09
14ण नागरीदास ग्रन्थावली सम्पादक– फैयाज अली खाँ, पृ.सं. 48
15ण निर्गुण काव्य की सांस्कृतिक भूमिका–रामसजन पाण्डेय, पृ.सं. 67